पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द से संवेदना तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

रचनाकार :-

अभिषेक आनंद

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका **–अभिषेक आनंद**

आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या:

अगर मेरी ज़रूरत नहीं रही, तो मेरी कीमत क्या है?

आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या: "अगर मेरी ज़रूरत नहीं रही, तो मेरी कीमत क्या है?"

मशीनों के बीच आदमी होने की कीमत...

एक दिन ऐसा भी आ सकता है, जब मशीनें हमारा काम हमसे बेहतर करेंगी। उस दिन सबसे बड़ा सवाल यह नहीं होगा कि इंसान क्या काम करेगा, बल्कि यह होगा अगर काम ही हमारी पहचान था, तो काम के बाद हम कौन होंगे? हम अक्सर तकनीक की प्रगति को उसकी गति से मापते हैं। कल जो काम करने में हमें कई घंटे लगते थे, आज वही काम कुछ मिनटों में हो जाता है। जिस जानकारी को खोजने के लिए कभी पुस्तकालयों की अलमारियाँ खंगालनी पड़ती थीं, वह आज हमारी स्क्रीन पर कुछ शब्द लिखते ही सामने आ जाती है। तस्वीरें बनाई जा रही हैं, भाषाएँ अनुवादित हो रही हैं, कोड लिखा जा रहा है, रिपोर्ट तैयार हो रही है, आवाज़ें बनाई जा रही हैं और कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी Artificial Intelligence (AI) धीरे-धीरे हमारे जीवन के उन हिस्सों में प्रवेश कर रही है, जिन्हें हम कभी केवल मनुष्य का क्षेत्र मानते थे। यह परिवर्तन अद्भुत है। यह मानव बुद्धि की उपलब्धि है। लेकिन हर बड़ी तकनीकी क्रांति अपने साथ एक असहज सवाल भी लेकर आती है। अगर मशीन हमारी तरह सोचने, लिखने, समझने और निर्णय लेने लगे, तो फिर इंसान की विशेषता क्या बचेगी? आज हम AI से डरते हुए सबसे पहले पूछते हैं मेरी नौकरी बचेगी या नहीं? लेकिन शायद यह सवाल अभी अधूरा है। असल सवाल इससे कहीं गहरा है, अगर मेरी नौकरी नहीं रही, तो क्या मेरी कीमत भी कम हो जाएगी?

यही वह प्रश्न है, जिस पर आज हमें रुककर विचार करने की आवश्यकता है।

नौकरी सिर्फ नौकरी नहीं होती...

हमारे समाज में नौकरी का अर्थ केवल वेतन नहीं है।

एक व्यक्ति जब कहता है, मैं शिक्षक हूँ, मैं डॉक्टर हूँ, मैं इंजीनियर हूँ, मैं किसान हूँ, मैं दुकानदार हूँ, मैं लेखक हूँ या मैं ड्राइवर हूँ , तो वह केवल अपना काम नहीं बताता। कहीं न कहीं वह अपनी पहचान भी बता रहा होता है।

हमारे पेशे ने हमारी सामाजिक पहचान का एक बड़ा हिस्सा अपने भीतर समेट लिया है। एक पिता के लिए नौकरी केवल महीने के अंत में आने वाली तनख्वाह नहीं होती। उसमें अपने परिवार की सुरक्षा का विश्वास छिपा होता है। एक माँ के लिए अपने हाथों से किया गया काम केवल आमदनी नहीं, अपने बच्चों के भविष्य की चिंता का उत्तर होता है। एक युवा के लिए पहली नौकरी केवल नियुक्ति पत्र नहीं, वर्षों की पढ़ाई और संघर्ष का प्रमाण होती है।

इसीलिए जब हम कहते हैं कि AI नौकरियाँ बदल देगा, तो हमें यह समझना चाहिए कि हम केवल रोजगार के आँकड़ों की बात नहीं कर रहे। हम लाखों लोगों की पहचान, आत्मविश्वास, सामाजिक सम्मान और भविष्य की कल्पना की बात कर रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के 2025 के विश्लेषण के अनुसार, दुनिया के लगभग हर चार में से एक कामगार का पेशा किसी न किसी स्तर पर जनरेटिव AI के प्रभाव के दायरे में आता है। लेकिन उसी अध्ययन का महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि अधिकांश नौकरियों के पूरी तरह समाप्त होने की तुलना में उनके रूपांतरित होने की संभावना अधिक है।

अर्थात भविष्य शायद इंसान बनाम मशीन का युद्ध नहीं होगा।

भविष्य शायद होगा

इंसान + मशीन..।

लेकिन इसके बावजूद एक बड़ा सामाजिक प्रश्न हमारे सामने रहेगा इस बदलाव में पीछे कौन छूटेगा?

AI से असली डर नौकरी जाने का नहीं, पीछे छूट जाने का है....

जब कोई युवा AI के बारे में सुनता है कि यह लेख लिख सकता है, चित्र बना सकता है, कोड लिख सकता है, डेटा का विश्लेषण कर सकता है और ग्राहक सेवा तक संभाल सकता है, तो उसके मन में एक स्वाभाविक चिंता पैदा होती है

अगर मशीन यह सब कर सकती है, तो मैं क्या करूँगा?

यह डर केवल तकनीकी नहीं है। इसमें आर्थिक और भावनात्मक दोनों परतें हैं।

कल्पना कीजिए एक छोटे शहर के उस युवा की, जिसने अपने परिवार की सीमित आमदनी के बावजूद पढ़ाई की।

उसके माता-पिता ने उसकी फीस भरी। उसने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की। उसने कंप्यूटर सीखा। उसने नौकरी के सपने देखे। लेकिन जब वह नौकरी के बाजार में पहुँचा, तब उसे पता चला कि जिन शुरुआती कामों को सीखकर वह अनुभव हासिल करना चाहता था, उनमें से बहुत से काम अब AI उपकरणों की मदद से पहले की तुलना में कम लोगों से किए जा सकते हैं।

वह बेरोजगार ही हो, यह जरूरी नहीं। शायद उसे नौकरी मिल जाए।

लेकिन संभव है कि उससे पहले जैसी नौकरी के लिए अब पाँच साल के अनुभव की अपेक्षा की जाए, क्योंकि शुरुआती स्तर के कुछ काम मशीन कर रही होगी।

यहीं एक नई समस्या जन्म लेती है

अगर शुरुआती सीढ़ी ही छोटी हो गई, तो नए लोग अनुभव कहाँ से प्राप्त करेंगे?

यह सवाल विशेष रूप से युवाओं के लिए महत्वपूर्ण है।

2026 में प्रकाशित ILO के एक शोध सार में यह भी संकेत मिलता है कि GenAI का प्रभाव केवल रोजगार की संख्या तक सीमित नहीं है; काम के संगठन, कार्यस्थल की स्वायत्तता और विशेष रूप से युवाओं के रोजगार अवसरों पर भी इसका असर पड़ सकता है।

इसलिए AI का प्रश्न केवल यह नहीं है कि कितनी नौकरियाँ जाएँगी।

सवाल यह भी है

कौन सी नौकरियाँ बचेंगी?

किस तरह बचेंगी?

उनमें प्रवेश करना कितना आसान होगा?

और क्या हर व्यक्ति बदलती दुनिया के साथ बदल पाएगा?

मशीन काम छीन सकती है, लेकिन क्या वह उद्देश्य दे सकती है?

मान लीजिए भविष्य में कोई मशीन हमारे लिए लेख लिख देती है।

वह तेज़ है।

वह थकती नहीं।

वह हजारों पुस्तकों से सीखी जानकारी का उपयोग कर सकती है।

वह भाषा की गलतियाँ पकड़ सकती है।

वह अलग-अलग शैली में लिख सकती है।
लेकिन एक प्रश्न फिर भी बचता है
क्या वह उस लेख के पीछे का जीवन जी सकती है?
एक किसान जब सूखी मिट्टी को देखकर बारिश की प्रतीक्षा करता है, तो उसके पास केवल मौसम का डेटा नहीं होता। उसके पास चिंता होती है। उम्मीद होती है। परिवार होता है। कर्ज होता है। मिट्टी से रिश्ता होता है।
एक माँ जब अपने बच्चे के परीक्षा परिणाम की प्रतीक्षा करती है, तो वह केवल अंक नहीं देख रही होती। उसके भीतर वर्षों की मेहनत और प्रार्थना होती है।
एक सैनिक जब सीमा पर खड़ा होता है, तो उसके लिए देश केवल नक्शे पर बनी रेखा नहीं होता।
एक शिक्षक जब किसी कमजोर विद्यार्थी को बार-बार समझाता है, तो वह केवल सूचना नहीं दे रहा होता। वह उस बच्चे के भीतर आत्मविश्वास पैदा कर रहा होता है।
AI सूचना दे सकता है।
AI गणना कर सकता है।
AI पैटर्न पहचान सकता है।
AI हमारी क्षमता बढ़ा सकता है।
लेकिन मनुष्य का अनुभव केवल सूचना नहीं है।
मनुष्य अनुभव का जीव है।
यही अंतर भविष्य में हमारी सबसे बड़ी ताकत बन सकता है।
जिसे मशीन नहीं कर सकती, उसे बचाने की जरूरत नहीं उसे मजबूत करने की जरूरत है
AI के आने के बाद हमें यह गलती नहीं करनी चाहिए कि हम हर उस काम को बचाने की कोशिश करें जिसे मशीन बेहतर कर सकती है।
इतिहास हमें बताता है कि तकनीक ने हमेशा काम का स्वरूप बदला है।
हल ने हाथों की मेहनत बदली।
कारखानों ने उत्पादन बदला।
कंप्यूटर ने दफ्तर बदले।

इंटरनेट ने संचार बदला।

स्मार्टफोन ने हमारी रोजमर्रा की आदतें बदल दीं।

लेकिन हर बदलाव के साथ मनुष्य ने अपने लिए नई भूमिकाएँ भी बनाई हैं।

आज चुनौती यह नहीं कि AI को रोक दिया जाए।

चुनौती यह है कि AI के साथ मनुष्य की भूमिका को बेहतर बनाया जाए।

विश्व आर्थिक मंच की 2025 की Future of Jobs Report के अनुसार, 2030 तक विभिन्न बड़े बदलावों के कारण लगभग 17 करोड़ नए रोजगार पैदा होने और लगभग 9.2 करोड़ रोजगार विस्थापित होने का अनुमान है अर्थात कुल मिलाकर लगभग 7.8 करोड़ नौकरियों का शुद्ध इजाफा, हालांकि यह बदलाव समान रूप से सभी लोगों और क्षेत्रों को लाभ नहीं देगा। रिपोर्ट यह भी बताती है कि तकनीकी कौशल के साथ रचनात्मक सोच, लचीलापन और सहयोग जैसे मानवीय कौशल महत्वपूर्ण बने रहेंगे।

इसका अर्थ यह नहीं कि हर व्यक्ति सुरक्षित है।

इसका अर्थ यह है कि भविष्य का कर्मचारी केवल काम करने वाला व्यक्ति नहीं होगा।

वह ऐसा व्यक्ति होगा जो

मशीन से काम करवाना जानता हो, लेकिन मशीन जैसा बनना न भूले।

-अभिषेक आनंद

महेशपुर, जिला गोड्डा (झारखण्ड)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ...... **अभिषेक आनंद** ......जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...